ये अव्यक्त इशारे

अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर योग को ज्वाला रूप बनाओ

13-09-2025

सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की, तो फॉलो फॉदर करो। जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। सारथी स्वतः ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे और सब-कुछ करते भी माया की लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

Now ignite the fire of love and make your yoga volcanic.

To be a charioteer means to be soul conscious because each soul is a charioteer. Brahma Baba became number one by practising this and achieving success. Therefore, follow the father. The Father enters a body and controls it, that is, He becomes the charioteer. He doesn't depend on the body, and this is why He remains loving and detached. In the same way, all of you Brahmin souls should maintain the stage of a charioteer like the Father. When you are the charioteer of your body, you naturally become a detached observer and remain immune to any effect of Maya in whatever you do, see or hear.